© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

लीलाधर जगूड़ी सामाजिक संवेदना के कवि

कीर्ति पटेल

शोध छात्रा, हिन्दी

नेहरू ग्राम भारती, विश्वविद्यालय

कोटवा जमुनीपुर इलाहाबाद

लीलाधर जगूड़ी विशुद्ध मनुष्य के कवि हैं। उन्हें आवाम एवं समाज का कवि कहा जा सकता है। यथार्थ के चटक बिम्बों का कल्पनाशील संयोजन उनके रचना कौशल का एक प्रमुख गुण हैं। वे सामाजिक–राजनीतिक यथार्थ पर सतर्क दृष्टि रखते हैं। उनकी भाषा जीवन के काव्यत्व के प्रति संवदेनशील रहती है। परिवेश का समृद्ध संभार उनकी कविताओं में मिलता है। वे समकालीन संवेदना को साथ लेकर आगे बढ़े और सबसे ज्यादा उस पर लिखा भी। वे अपने आप–पास की समाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों को बुनते हैं और पहाड़ की सम्पन्न विरासत से उर्जा ग्रहण करते हैं। उन्होंने अपने समय, समाज, इतिहास और उसमें मनुष्य की यातना और दुर्दशा पर कविताएँ लिखी हैं। दीन दुनिया की बहुत–सी बातें उनकी कविताओं में आयी हैं जगूड़ी का समाज–शास्त्रीय बोध बहुत अच्छा हैं समाज किस नये रंग ढंग में ढल रहा है? लोगों का रहन–सहन किस स्तर पर है? लोग किस दिशा में जा रहे है? विश्व भर में कैसी परिस्थितियॉ परिव्याप्त है? इसकी तीव्र अनुभूति करते हुए अपने इस ज्ञान की अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्ण विडम्बनाओं के साथ की है। उन्होंने लिखा है कि– **"आम आदमियों के समाज में से एक सही आदमी या एक नये बनते हुए आदमी की कविता में निर्माण करना या उसकी पहचान के लिए जिस कोहरे में हाथ–पॉव मारे जा रहे थे, आप देख सकते हैं कि छठें दशक में वह आदमी कहीं से न पकड़ में आ रहा है, न उसका कोई व्यक्तित्व बन रहा है। 'मगर वह आदमी कहीं से भी नहीं बनता'। मेरी कविता कहीं से न बनते आदमी के चेहरे को बनाने पर तुली थी। नाटक जारी है' में कुल जमा यह उस समय का युवा आदमी है जो तरह–तरह के**

फैशनों से अपने व्यक्तित्व को ढक लेता है लेकिन छिपा नहीं सकता। उसकी साघनहीनताा और विपन्नता कहीं–न–कहीं से झलक आती है।''[1]

वस्तुतः इस समाज में आम आदमी का जो देखा जाना भुगता हुआ जीवन है वह पूरी तरह अप्रत्याशित और आकस्मिक है। **''भय की शक्ति देता है''** की एक कविता **'मोड़'** में जगूड़ी मनुष्य की इस सामाजिक यथार्थता को व्यक्त करते हुए लिखते हैं–

''मोड़ चाहे सड़क पर हों चाहे वृक्ष में चाहे जिन्दगी में,
इन्ही में से होते हैं कुछ अच्छे कुछ खराब कुछ विचित्र मोड़,
जिनके बिना कुछ दूर तक ही भली लगती है सपाट सड़क,
फिर आना ही चाहिए कोई नया मोड़,
बस आता ही होगा कोई नया मोड़।''[2]

लीलाधर जगूड़ी भी एक सांसारिक कवि हैं। समाज की प्रत्येक गतिविधि, हलचल और कम्पन को वे अपनी संवेदना से ओझल नही होने देते। इस संसार के साथ–साथ चलते हुए वे दूर तक उसका पीछा करते है और उसे अपनी भाषा के अनुभव में बदल लेते हैं। वे लिखते हैं–

''मैं हमेशा इस पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में,
रहना चाहता हूँ,
कुछ इस तरह कि यह पृथ्वी मनुष्यों के बिना तरस जाए;
एक दिन एक रात भी रहने को राजी न हो,
कि ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड में एक ओर अक्षांश,
अंधेरे में एक ओर सूरज माँगने लगे,
मैं रहना चाहता हूँ कुछ इस तरह कि एक मनुष्य
इस पृथ्वी को इसके रसातल से जानता हूँ,
एक मनुष्य जो इस पृथ्वी को इसके तलातल से जानता हो।''[3]

दुर्घटनाओं से भरे हुए समाज में जगूड़ी इस नश्वर संसार को उसकी सम्पूर्णता के साथ, उसकी समस्त दुश्चिन्ताओं को अपने मस्तिष्क में धारण कर ढोते है, वे लिखते हैं–

''फिर भी मैं हमेशा ही
खुद को दौड़ते हुए देखता हूँ
और देखता हूँ कि धरती
एक बस्ते की तरह मेरी पीठ पर लदी हुई है।''[4]

'ओ मेरी पुरानी चिड़िया' शीर्षक कविता में उन्होंने एक चिड़िया के बहाने मौत के सिलसिलों से भरी इस सृष्टि में जीने के शाश्वत सत्य की कहानी कही हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस समाज से जगूड़ी का सम्बन्ध रोमांचक और आत्यन्तिक किस्म का हैं–

"ओ मेरी पुरानी चिड़िया तुम कभी मरती नहीं हो
जब भी देखता हूँ तुम कोई रूप ले चुकी होती हो
एक बार बचपन में तुम्हारे मरे बच्चे देखे थे
उसके बाद जिन्दगी मौत के सिलसिलों से भरी हुई है
और अब तो इस जगह के लिए सबसे पुराना नाम ही
सटीक लगता है– मृत्युलोक।"[5]

लीलाधर जगूड़ी शुरू से ही एक प्रतिबद्ध सामाजिक कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में सत्ता के विरोध के साथ–साथ व्यवस्था के पूरे तंत्र का पर्दाफाश किया है। पुलिस तन्त्र के भयानक अत्याचारों का चित्रण करते हुए उन्होंने अपनी **'बलदेव खटिक'** कविता में इसे बेनकाब किया है। अपनी **'बयासी का बसन्त'** शीर्षक कविता में पुलिस के संहार के बाद की स्थितियों का तीव्र विरोध करते हुए उन्होंने लिखा है–

''जहाँ–जहाँ गोलियाँ दागी गयी क्या वहाँ–वहाँ फूल दाग दूँ
घावों पर कसीदे काढ़ हूँ
चुराये गये बच्चों के लिए लिख दूँ कि उनके चेहरे फूलों जैसे थे,
लापता लोगों के लिए कह दूँ
कि वे कहीं मौज मार रहे हैं
यह नहीं कहूँगा कि उनकी मार से आप मौन धारण करें

समाज में अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए, अपनी सन्तानों एवं परिवार के भरण–पोषण के लिए आज घूस लेना प्रत्येक व्यक्ति की मजबूरी बन गई है। आज समाज का किसान वर्ग, श्रमिक वर्ग तथा आम आदमी झुग्गी–झोपड़ियों में भूखा–नंगा रहकर समाज के धनाढ्य वर्ग के लिए ऐशो–आराम की वस्तुएँ मुहैया करा रहा है। जगूड़ी समाज में आम आदमी की यह दशा देखकर अत्यन्त व्यथित हो जाते हैं और अपनी कविताओं के माध्यम से उसे संघर्ष की प्रेरणा देते हैं। वे लिखते हैं–

उदास लोगो! उठो और फैसला दो
उठो और जिसने कल तुम्हें
कुचला था
उसे घोड़े की नाल बना दो।''[6]

समाज व्यवस्था के संचालकों की क्रूर व्यवस्था, अन्यायी प्रथा एवं संवेदन शून्यता को उजागर करके जगूड़ी समाज के भूखे–नंगे गरीब मनुष्यों की आत्मा को झकझोरते हैं।

समकालीन समाज में आ रहे पारिवारिक सम्बन्धों में बिखराव को भी लीलाधर जगूड़ी ने अपनी कविताओं में लक्षित किया है। वे इसका कारण समाज में अर्थ की प्रधानता को मानते हैं क्योंकि आज सभी सम्बन्धों का आधार धन पर केन्द्रित हो गया है। आर्थिक जर्जरता के कारण ही समाज में पति–पत्नी के बीच टकराव और सम्बन्ध–विच्छेद की स्थिति उत्पन्न हो रही है। विश्वास, त्याग और समर्पण का दाम्पत्य–जीवन में कोई महत्व नहीं रह गया है। देह सुख ही दाम्पत्य जीवन का पर्याय बन गया है। दाम्पत्य सम्बन्धों की पवित्रता और गरिमा नष्ट हो चुकी है। आधुनिक दाम्पत्य सम्बन्ध का चित्र प्रस्तुत करते हुए जगूड़ी लिखते हैं–

"किन्तु वहाँ कुछ भी अपरिचित क्यों नहीं होता?
वह जिक्र जो बालों की प्रशंसा से
आँखों की बरौनियों तक आकर
बेचाल होकर किसी की चाल से लिपट जाता है
एक उत्तेजना को भुनाने के अलावा।"[7]

समाज में आज भी असंख्य लोग अशिक्षित है। शिक्षा की प्रगति के प्रति सरकारी तंत्र लापरवाह है, उनकी शिक्षा सम्बन्धी घोषणाएँ एवं राजनीतिक वक्तव्य खोखले होते हैं। बहुत से बच्चे स्कूल जाने की उम्र में बर्तन साफ कर रहे हैं। इसे लक्षित कर जगूड़ी कहते हैं–

यही कोई दसवाँ–ग्यारहवाँ साल
और ढेर–सी पतीलियाँ
भाग्य भाग दरारदार
होना था जिन्हें स्कूली हथेलियाँ।"[8]

जगूड़ी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में सबसे बड़ी बाधा बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि को भी मानते हैं जो समस्त विकास की योजनाओं को विफल कर देती है। वे लिखते हैं–

"समाजवाद की सातवीं ऋतु में मेरी बीवी
बच्चों का मामला है
दुश्मन बिस्तर से आ रहे हैं
देश का बिस्तर से मुकाबला है।"[9]

आज देश की आधे से अधिक जनसंख्या फुटपाथों पर रात काट रही है और आम आदमी एक–एक दाने के लिए तरस रहा है, ऐसे में समाज में शिक्षा की प्रगति होना बहुत ही दुष्कर है।

लीलाधर जगूड़ी की कविताओं में आये ये व्यंग्य केवल इक्कीसवीं सदी की सामाजिक विडम्बना की ओर ही संकेत नहीं करते बल्कि हमारी मनःस्थितियों की नासमझी पर परिवर्तनकारी गुस्सा भी दिलाते हैं। इस तरह के अखबारी और रोजमर्रा के चिन्ता जनक विषय उनकी कविताओं में आते रहते हैं। जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आज वाकई में समाज की आबोहवा बाजार की मुट्ठी में है। इन विषयों को अभिव्यक्त करने वाली उनकी इन कविताओं का मूल्यांकन हिन्दी कविता की स्थापित आलोचना की परम्परा से नहीं किया जा सकता। परन्तु जगूड़ी इन खराब परिस्थितियों को काव्य का विषय बनाना अनिवार्य मानते हैं और लिखते हैं–

''समाज और जीवन खराब है क्या इसीलिए स्वाभाविक है कि कविता भी
खराब हो?
समाज और जीवन जब ठीक होगा क्या तभी दिखेंगी कविता की खराबियाँ
भी चन्द खूबियों के साथ?
यह जो कुछ भी मेरी कविता बना रही है इसका सामाजिक खराबियों से
ही तो कोई सम्बन्ध नहीं ?''[10]

कवि जगूड़ी ने अपनी कविताओं में वर्तमान इक्कीसवीं सदी के समाज की विडम्बनाओं, विसंगतियों, विषमताओं एवं विद्रुपताओं का भी पूर्ण यथार्थता को ध्यान में रखकर अत्यंत जीवन्त चित्रण किया है। इक्कीसवीं सदी के समाज में परिव्याप्त वस्तुस्थितियों के प्रति आज के कवि की जिम्मेदारियां बहुत बढ़ गई हैं। कवि–कर्म अत्यंत कठिन हो गया है परन्तु कविता की आवश्यकता में कमी नहीं आयी है। जगूड़ी लिखते हैं कि– **''इस समय पूरी दुनिया की कविता हमारे सामने हैं जो हो चुकी है वह कविता अगर हम कोशिश करें तो हमसे आज छिपी नहीं रह सकती। मगर एक कविता है जो हमसे छिपी हुई है और वह है भविष्य की कविता, उसे कविता का भविष्य कहना युक्तिसंगत होगा। भविष्य की कविता को अपने वर्तमान में मनुष्य के द्वारा ही पैदा होना है, मशीन के द्वारा नहीं।''**[11]

लीलाधर जगूड़ी की कविताओं में चित्रित समाज हमारे वर्तमान समाज का जीता जागता चित्र है, जिसे देखकर हमें यह भान हो जाता है कि आज हमारी सामाजिक संरचना का ढाँचा पूरी तरह से चरमरा गया है। उनकी कविताओं में चित्रित भ्रष्टाचार, आर्थिक वैषम्य, अमानुषिक रवैया तथा उत्पीड़न के ये सजीव चित्र समाज के आम आदमी की सच्ची कथा सुनाते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. इस यात्रा में', लीलाधर जगूड़ी–राज कमल प्रकाशन– नयी दिल्ली' द्वितीय सं0– 2009 पुराने प्रसंग के प्राण, पृ0सं0– 13
2. 'भय भी शक्ति देता है'– लीलाधर जगूड़ी– राजकमल प्रकाशन– नयी दिल्ली– प्र0सं0– 1991 'मोड़', पृ0सं0– 138
3. अनुभव के आकाश में चॉद, 'इतिहास से भी पहले', लीलाधर जगूड़ी 1994 राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पृ0सं0–11
4. वही, पृ0सं0– 143
5. भय भी शक्ति देता है', ओ मेरी पुरानी चिड़िया, लीलाधर जगूड़ी, 1991 राजकमल प्रकाशन– नयी दिल्ली पृ0सं0– 75
6. 'रात अब भी मौजूद है, लीलाधर जगूड़ी, 1976 इंद्राप्रस्थ प्रकाशन नई दिल्लीj0सं0– 24
7. नाटक जारी है', लीलाधर जगूड़ी 1972 अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं0– 18
8. वही पृ0सं0– 10
9. वही पृ0सं0– 85
10. खबर का मुँह विज्ञापन से ढका है, लीलाधर जगूड़ी, 2008 वाणी प्रकाशन नई दिल्ली पृ0सं0– 51
11. 'इस यात्रा में', लीलाधर जगूड़ी 1974 राजकमल प्रकाशन– नयी दिल्ली , पृ0सं0– 16